नेहरू बाल पुस्तकालय

भूलना मत काका

आनंद प्रकाश जैन

चित्रांकन
फ़ज़रूद्दीन



nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 1 6/24/2019 11:33:59 AM

12 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अंग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

ISBN 978-81-237-8822-7

पहला संस्करण : 2019 (*शक* 1941)
© मंजूरानी जैन
Bhulna Mat Kaka *(Hindi Original)*

₹ 75.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

1

धाँय! धाँय!! धाँय!!!

ग्वालियर से 11 किलोमीटर की दूरी पर बसा है एक छोटा-सा क़स्बा, शिवाजीगंज।

शिवाजीगंज में बाजार के पास ही बना है माधव मिडिल स्कूल। काफी पुराना स्कूल है, यह तो स्कूल की इमारत देखकर ही पता चल जाता है। स्कूल का नाम खूब फैला हुआ है। आस-पास के क़स्बों और गाँवों के बच्चे भी शिवाजीगंज में पढ़ने आते हैं।

स्कूल में तीन-सौ विद्यार्थी हैं ... और मास्टर कुल छह! सब मास्टर पुराने हैं, इसलिए पढ़ाते समय बेंत का प्रयोग करने से नहीं हिचकते, इतिहास के मास्टर हैं पंडित भीमचंद। बाप रे! उन्हें तो आधा किलोमीटर दूर से देखकर ही पसीने छूटने लगते हैं। सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। दस मारते हैं और एक गिनते हैं और किसी को दर्जनभर छड़ियों का ईनाम देंगे, तो किसी की हथेलियों पर दर्जनभर लकीरें खींच देंगे।

माधव मिडिल स्कूल की छठी कक्षा में पढ़ते हैं—जयमोहन और नीलकमल। जयमोहन के घर का नाम है 'जग्गू'। वह ज़मींदार घराने का इकलौता लड़का है। नीलकमल के पिता थानेदार हैं। उसका छोटा नाम है 'नीलू'।

जग्गू और नीलू शिवाजीगंज में नहीं रहते। उनका घर दो किलोमीटर दूर माऊच में है। उनका नौकर रोज़ उन्हें स्कूल छोड़ने आता है। यह नौकर कभी जग्गू के घर का होता है, कभी नीलू के घर का। रोज़-रोज़ उनका साथ-साथ आना-जाना होता है, इसलिए दोनों में गहरी दोस्ती है।

आधी छुट्टी का समय है।

nbt.india एक: सूते सकलम्

नीलू और जग्गू आधी छुट्टी के समय नीम के पेड़ की छाया में बैठे हैं। नीलू थोड़ी चिंता में है। आधी छुट्टी के बाद पहला घंटा इतिहास का है न—इसीलिए, इतिहास का मतलब है मास्टर भीमचंद, मास्टर भीमचंद का मतलब है, बेंतें—एक के बाद एक, एक के बाद एक!

नीलू ने जग्गू की बगल में कुहनी मारकर कहा—"ऐ जग्गू!"

कुहनी जरा ज़ोर से लगी थी। जग्गू बिगड़कर बोला, "क्या हुआ है तुझे? कितने ज़ोर से कुहनी मारी है!"



"मैंने तो कुहनी ही मारी है। अभी मास्टरजी की बेंत पड़ेंगी।"

"बेंत पड़ेंगी तुझे, मुझे क्यों पड़ेंगी?" नीलू थोड़ी सकपकाई। वह जग्गू को पिटने में भी अपना साथी बनाना चाहती थी। उसने पूछा, "इतिहास याद है?"

"खूब याद है।" जग्गू ने तपाक् से उत्तर दिया।

"भारत की आज़ादी की पहली लड़ाई पर थोड़ा प्रकाश डालकर दिखाओ।" नीलू ने मास्टर भीमचंद के अंदाज में कहा।

जग्गू थोड़ा सकपकाया। झेंपकर बोला, "पाठ तो मुझे याद नहीं। हाँ, मेरे पास एक ऐसा जबरदस्त बहाना है कि मास्टरजी मुझे कुछ नहीं कहेंगे।"

"कौन-सा बहाना है? सुनूँ तो भला।"

"मैं नहीं बताऊँगा।"

"तो मैं कल से तुझे आधी छुट्टी के समय अपना संतरा नहीं खाने दूँगी।"

"मत देना।"

"मैं तेरे साथ कभी स्कूल नहीं आऊँगी," रूठ कर नीलू ने कहा।

यह जग्गू के लिए कड़वा घूँट था—बोला, "ले बाबा सुन, मैं कहूँगा—मास्टरजी, कल जब मैं घर पहुँचा, तो क्या देखता हूँ कि पिताजी बिस्तर पर पड़े-पड़े कुछ-का-कुछ बड़बड़ा रहे हैं! नौकर छुट्टी पर था। महरी बीमार थी। माँ अपनी बहन से मिलने ग्वालियर गई हुई थी। मैं बहुत घबरा गया था। मैं डॉक्टर साहब के दवाखाने तक दौड़ा चला गया। डॉक्टर साहब ने आकर दवाई दी। वह मुझे पिताजी के माथे पर गीली पट्टियाँ रखते रहने को बोल गए। मास्टरजी, मैं सारे दिन पट्टियाँ बदलता रहा। पाठ याद करने का तो मौका ही नहीं मिला। मैं कल या परसों तक सारा पाठ सुना दूँगा।

जग्गू ने जैसे ही अपना बहाना खत्म किया, नीलू बिगड़ खड़ी हुई।

"नहीं चलेगा।"

"क्या नहीं चलेगा?"

"तेरा यह बहाना।"

"क्यों नहीं चलेगा?"

nbt.india
एक: सूते सकलम्

"इसलिए कि बिल्कुल यही बहाना मैंने सोच रखा है। तू हमेशा मेरा बहाना चोरी कर लेता है। पहले भी कई बार तू मेरा सोचा हुआ बहाना लगा चुका है और बाद में मैं ख़ामखाह फँस जाती हूँ। इस बार मैं तुझे ऐसा बिल्कुल नहीं करने दूँगी।"

"नीलू, मैंने रातभर जागकर यह बहाना सोचा है। यह मेरा बिल्कुल अपना बहाना है।"

"ऊहुँक्! तू झूठ बोलता है। रातभर जगा था, तो भारत की आज़ादी की पहली लड़ाई क्यों नहीं पूरी याद कर ली?"

जग्गू ने समझौता करते हुए कहा, "अच्छा, तुझे यही बहाना चाहिए न, तो तू ही इसे रख ले। मैं इससे भी अच्छा बहाना सोच लूँगा।"

"जैसे?"

"सोचना पड़ेगा।"

"तो सोचकर ही बता दे न।"

जग्गू ने सोचकर बताया, "मास्टरजी कल रात रास्ते में मुझे लू लग गई। गलती से मैंने सिरदर्द के बदले पेट साफ करने की दवाई खा ली थी। रातभर परेशान रहा, मास्टरजी। मैं बिल्कुल सच कहता हूँ, मास्टरजी। मैं कल ही आपको भारत की पहली लड़ाई का पूरा हाल सुना दूँगा। आप चाहें तो पिताजी को बुलवाकर पूछ लीजिए।"

"अरे वाह! यह बहाना तो बड़ा ज़बरदस्त है। अच्छा देख, यह बहाना तू मुझे दे दे। पहले वाला बहाना तू रख ले।"

"ये लड़कियाँ भी अजीब होती हैं।" जग्गू नाक चढ़ाकर बोला, "कभी कुछ तो कभी कुछ। मैं जो भी बहाना सोचता हूँ, उसे तू उड़ा ले जाती है।"

"अच्छा, बाबा...।"

नीलू के शब्द मुँह में ही घुल गए। घंटी की आवाज़ सुनाई दी—टन-टन-टन-टन-टन-टन...!

आधी छुट्टी खत्म हो गई थी।

नीलू और जग्गू अपनी कक्षा में पहुँचे और अपने-अपने डेस्क के पीछे बैठ गए। सारे बच्चे भीगी बिल्ली बने बैठे थे। कमरे में सूई भी गिरती तो उसकी आवाज सुनाई पड़ जाती। दूर-दूर तक मास्टरजी की धूल भी उड़ती नहीं दिख पड़ रही थी, मगर बच्चों का हाल बेहाल था।

nbt.india एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 6 6/24/2019 11:34:00 AM

कुछ समय बाद दरवाजे पर मास्टर भीमचंद खड़े दिखाई दिए। सारे बच्चे लपक-झपक खड़े हो गए।

"बैठ जाओ!" मास्टरजी ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "हाँ, तो, मैं तुम्हें कल आज़ादी की पहली लड़ाई के बारे में बता रहा था। आगे बढ़ने से पहले मैं कल का पाठ सुनूँगा। सवाल है, "अंग्रेजों ने झाँसी के किले पर कैसे अधिकार किया?"

मानो चूहा रोटी कुतर रहा हो, इस तरह फुसफुसा कर जग्गू ने नीलू के कान में पूछा, "यह झाँसी की बच्ची कहाँ है, नीलू?"

नीलू ने भी उसी तरह फुसफुसा कर उत्तर दिया, "जब मैं नानाजी के यहाँ भोपाल जाती हूँ, तो झाँसी रास्ते में पड़ता है। बहुत बड़ा स्टेशन है। वहाँ गाड़ी आधा घंटा रुकती है। माँ हमें झाँसी के स्टेशन पर पूड़ियाँ खिलाती हैं।"

"स्टेशन का हाल नहीं पूछ रहा हूँ।" खीज कर जग्गू ने कहा, "झाँसी में कोई किला-विला भी है क्या?"

"मैंने देखा तो नहीं है, पर जब मास्टरजी कह रहे हैं, तो होगा जरूर।"

"तुझे पता है कि इस किले पर अंग्रेजों का अधिकार है?"

"अच्छा!"

"मास्टरजी बता रहे हैं न।"

"मगर अंग्रेज तो भारत छोड़कर चले गए हैं!" नीलू ने आश्चर्य से कहा।

"तो झाँसी के किले से नहीं गए होंगे।"

लगता था मास्टरजी आज बेंत प्रयोग करने के मूड में नहीं थे। उन्होंने कक्षा के सबसे माने हुए रट्टू लड़के तोताराम को जवाब देने के लिए चुना।

तोताराम इतिहास को एकदम तोते की तरह ही रट डालता था। उसका असली नाम 'बमबहादुर सिंह' था।

लेकिन उसका यह उपनाम तोताराम इतना चल गया था कि किसी को उसका असली और लंबा नाम याद ही नहीं रह गया था। खासतौर से इतिहास की लड़ाइयों का वर्णन तो वह ऐसे करता था जैसे कि संजय ने कुरुक्षेत्र के महायुद्ध का किया होगा। वह तोप के एक-एक गोले का हिसाब-किताब इस तरह उखाड़ता था कि मास्टरजी की तबीयत खिल उठती थी।

nbt.india एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 7 6/24/2019 11:34:00 AM



nbt.india
एकः सूते सकलम्

अब भी तोताराम महारानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेजों के बीच हुए स्वतंत्रता-संग्राम का वर्णन इस प्रकार कर रहा था, मानो वही पूर्व-जन्म में महारानी लक्ष्मीबाई का घोड़ा रहा हो।

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 8 6/24/2019 11:34:01 AM

मास्टरजी और सारी कक्षा उसके वर्णन को इस तरह सुन रहे थे, मानो उनके कानों में अमृत की बूँद टपक रही हो।

तोताराम ने बोलना बंद किया, तो मास्टरजी उसे बिना शाबाशी दिए आगे बढ़ने लगे...।

"झाँसी का किला फतह करके अंग्रेज ग्वालियर की तरफ बढ़े...।"

जग्गू ने नीलू के कान में फुसफुसाया, "अंग्रेज ग्वालियर तक कैसे पहुँचे होंगे।"

"रेलगाड़ी से गए होंगे," नीलू ने कहा, "उस ज़माने में हवाई जहाज थोड़े ही थे।"

"पंजाब मेल में बैठकर आए होंगे—ऐं?" जग्गू ने पूछा।

नीलू ने जग्गू की अकल पर तरस खाकर कहा, "और क्या अंग्रेज पैसेंजर गाड़ी में बैठेंगे, रे!"

मास्टरजी बता रहे थे—"घमासान लड़ाई के बाद अंग्रेजों ने ग्वालियर के किले पर भी अधिकार कर लिया।"

नीलू चौंक कर फुसफुसाई, "ऐ जग्गू, झाँसी के किले में ही नहीं, ग्वालियर के किले में भी अंग्रेज रहते होंगे।"

मास्टरजी युद्ध का वर्णन कर रहे थे—"चारों तरफ तोपें गरज रही थीं—धूम-धूम-धड़ाक्! तलवारों से तलवारें बज रही थीं—खनाखन, खनाखन! दुष्ट अंग्रेजों और वीर भारतीयों के खून से नदी बह चली थी। रानी बचकर कालपी की तरफ बढ़ी चली आ रही थी। अचानक एक नाले पर उनका घोड़ा अड़ गया...।"

नीलू के मुँह से सहसा ही निकल पड़ी 'हाय'!

कक्षा के बच्चे-बच्चे ने कनौतियाँ खड़ी कर लीं।

मास्टरजी बोले, "रानी का पीछा करते एक अंग्रेज ने जेब से पिस्तौल निकाला और रानी पर निशाना साधा...।"

मास्टरजी ने अपनी आदत के वश होकर बाएँ हाथ के अंगूठे में दाएँ हाथ की उँगली फँसाकर पिस्तौल बनाई और छत की ओर निशाना साधा—छत की ओर इसलिए ताकि किसी बच्चे को गोली न लग जाए। फिर उन्होंने छूटने की आवाज निकालने के लिए मुँह गोल किया।

तभी स्कूल के बाहर से धड़ाधड़ आवाजें सुनाई पड़ने लगीं—

धाँय! धाँय!! धाँय!!!

nbt.india एक: सूते सकलम्

2

तुम्हारे सींग कहाँ हैं?

सारे बच्चे काँप उठे।

डर की सिहरन उनके बदन कँपाती हुई सिर से पाँव तक बिजली की तरह गुजर गई।

मास्टरजी की कुर्सी तो लुढ़कते-लुढ़कते बची।

धड़ाकों की आवाज मास्टरजी के मुँह से नहीं निकली थी। ये धड़ाके असली बंदूकों की गोलियाँ छूटने से हुए थे और इतनी जोर से हुए थे कि आकाश में अभी भी गड़गड़ाहट गूँज रही थी। अवश्य ही बंदूक चलाने वाले स्कूल की इमारत के आस-पास मौजूद थे।

मास्टरजी ने आँखें मूँद ली थीं। उनके होठों से धीमे-धीमे इतिहास के बजाय हनुमान चालीसा का पाठ निकल रहा था। इन धड़ाकों के अर्थ वह खूब समझते थे। मास्टरजी ही क्यों, कस्बा शिवाजीगंज का हर जानदार इन धड़ाकों का मतलब समझता था। शिवाजीगंज ही क्यों, मध्य प्रदेश के भिंड-मुरैना इलाके में बंदूक के इन धड़ाकों के मायने पत्ते-पत्ते को मालूम थे।

यह सारा इलाका डाकुओं से भरा पड़ा था। सौ वर्ग किलोमीटर के इस इलाके में सरकार का नहीं, डाकुओं का सिक्का चलता था। बंदूकों की धाँय-धाँय, यानी डाकू आ पहुँचे।

मास्टरजी मुँह से तो हनुमान चालीसा बुदबुदा रहे थे और मन-ही-मन यह हिसाब-किताब लगा रहे थे कि डाका किसके घर पड़ेगा। शिवाजीगंज में आज किसका दुर्भाग्य जागा है? सोनू ठाकुर?—उसके घर अब क्या रखा है? पिछले डाके में डाकू उसका सभी कुछ तो लूट

nbt.india
एक: सूते सकलम्

ले गए थे। लखिया चौधरी?—वह अमीर तो जरूर है, पर इतना अमीर नहीं कि सिर्फ उसके ऊपर मेहरबानी करने के लिए डाकू शिवाजीगंज आने का कष्ट उठाएँगे। तो फिर कौन? डाकू यहाँ से किसी से अपनी पुरानी दुश्मनी निकालने तो नहीं आए! शायद!

मास्टरजी की उधेड़बुन चल ही रही थी कि कक्षा में कंधे पर बंदूक रखे एक आदमी घुसा। इस आदमी के मुँह पर कपड़ा लिपटा था। दुबला-पतला बदन, कमर में गोलियों की पेटी, चेहरा भी साधारण-सा। क्या इसका नाम डाकू है?

डाकू के ऐन पीछे एक दूसरा आदमी घुसा। इस आदमी के मुँह पर भी कपड़ा लिपटा था। उसके शरीर पर हथियार नाम की कोई चीज़ नहीं थी। वह शिवाजीगंज कस्बे का ही एक आदमी था और डाकुओं के इस इलाके में जासूसी करता था। कोई उसे पहचान न सके इसलिए उसने अपना मुँह चादर से लपेट रखा था।

मास्टरजी की आँखें पहले की तरह ही मुँदी थीं, हालाँकि उन्होंने कानी आँख से डाकू को कमरे में घुसते देख लिया था। अब तक इतना तो वह समझ ही गए थे कि डाकू किसी धनी



nbt.india
एक: सूते सकलम्

आदमी के बच्चे का अपहरण करने आए हैं। इस कक्षा में ऐसा कौन-सा बच्चा है? ऐसा एक ही बच्चा उसके सामने था—जयमोहन। बस, उसी को लेने आया है यह डाकू दल।

किंतु डाकू तो सीधा मास्टरजी की ओर बढ़ा। उसने उनके पाँव छूकर कहा, "पाय लागूँ, पंडितजी।"

मास्टरजी की टाँगें भय से थर-थर काँपने लगीं। उन्होंने मुँह से कुछ कहना चाहा, पर होठों से सिर्फ घिर्र-घिर्र की आवाज ही निकलकर रह गई।

डाकू हँसा, "पंडितजी, आपने मुझे पहचाना नहीं। मैं आपका बहुत पुराना चेला हूँ। बिरजू नाम है मेरा। कुछ याद आया, मास्टरजी? मैं यहीं पढ़ता था। आप इतिहास पढ़ाते थे। मुझे तो आपकी एक-एक बात याद है, मास्टरजी। आप दस बेंत मारकर एक गिनते थे। आपको कौन भूल सकता है, मास्टरजी?"

मास्टरजी को तो मानो जुड़ी बुखार ही चढ़ आया था। उनके पढ़ाए कितने ही चेले-चाँटे बड़े-बड़े ओहदों पर जा पहुँचे थे। वे आज भी आकर श्रद्धा से उनके पैर छूते थे। किसे ख़बर थी कि उनका एक सुयोग्य शिष्य डाकू भी जा बनेगा! फिर यह भी क्या पता था कि डाकू बनकर वह एक दिन उन बेंतों का हिसाब चुकाने स्कूल में आ पहुँचेगा! हे भगवान, इस पापी शरीर में गोली घुसेगी, तो कितना कष्ट होगा!

मास्टरजी ने अपना अंत समय आया जान और भी ज़ोर से आँखें मूँद लीं। वही हनुमान चालीसा का पाठ!

डाकू ने एक ठहाका लगाया और बोला, "डरिए मत, मास्टरजी, मैं उन बेंतों का बदला लेने नहीं आया हूँ। पापी जरूर हूँ, पर इतना तो नहीं कि अपने गुरुजी पर ही बंदूक उठाऊँ।"

मास्टरजी की आँख खुली। उन्होंने फिर एक बार कुछ कहने की कोशिश की, पर हाय री तीन इंच का जीभ! जीभ ने इतिहास के सिवा कुछ और उगलने में सहायता करने से इनकार ही कर दिया। उनके मुँह से आवाज तो जरूर निकली, पर वही खाली-पीली घिर्र-घिर्र।

इसी बीच मुँह पर चादर ओढ़े वह जासूस आदमी कक्षा के एक-एक बच्चे को घूर रहा था। चादर के ऊपर निकली उसकी आँखें तेजी से इधर-से-उधर घूम रही थीं। जग्गू पर पहुँच कर उसकी नज़रें रुक गईं। उसने जग्गू और नीलू की तरफ इशारा करके अपने साथी डाकू के कान में कुछ कहा।

nbt.india एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 12 6/24/2019 11:34:02 AM

नीलू जग्गू के कान में फुसफुसा कर बोली, “ठीक से बैठ, रे जग्गू। यह मुँह ढँका आदमी उस डाकू से तेरी शिकायत लगा रहा है।”

जग्गू बोला, “मैंने तो कुछ भी नहीं किया।”

“तू उस डाकू को घूर-घूर कर क्यों देख रहा था? अच्छा, अब शोर न कर।”

डाकू ने जग्गू और नीलू को खड़ा होने का इशारा किया। दोनों खड़े हो गए।

“तुम दोनों बाहर आ जाओ।” डाकू ने बड़े प्यार से कहा। दोनों अपने डेस्कों से बाहर आ गए।

“हमारे साथ चलोगे?”

डाकू का यह प्रश्न सुनकर जग्गू ने नीलू की ओर देखा और नीलू ने जग्गू की ओर। नीलू ने पूछा, “कहाँ?”

“हमारे घर। हमारे पास जीप है। हम तुम्हें सैर कराके यहीं छोड़ जाएँगे।”

“कब?” नीलू ने पूछा।

“कुछ दिनों बाद।” डाकू ने उत्तर दिया।

सहसा नीलू बोल उठी, “तुम झूठ बोलते हो। तुम हमें बोरी में बंद कर दोगे।”

डाकू हँसा। “अरे नहीं। भला मैं तुम्हें बोरी में कैसे बंद कर सकता हूँ? तुम दोनों इतने प्यारे-प्यारे बच्चे हो। फिर मेरे पास तो बोरा है ही नहीं।”

जग्गू ने भी नीलू से पूछा, “हाँ, इसके पास बोरा कहाँ है?”

डाकू मास्टरजी की ओर घूमा। “मास्टरजी, बोलिए न कि ये मेरे साथ चलें।”

मास्टरजी ने तीसरी बार कुछ कहने की कोशिश की। नतीजा वही घिर्र-घिर्र।

नीलू ने जग्गू की ओर देखा, मानो कह रही हो कि मास्टरजी कह रहे हैं तो चलना ही पड़ेगा।

डाकू ने दो लिफाफे निकालकर मास्टरजी की ओर बढ़ाए।

“आपको थोड़ी तकलीफ़ दे रहा हूँ, मास्टरजी। ये लिफाफे इन बच्चों के माँ-बाप तक पहुँचा दीजिएगा ताकि पीछे वे इनकी फ़िक्र न करें।”

मास्टरजी अच्छी तरह जानते थे कि इन लिफाफों में जो चिट्ठियाँ होंगी, उनमें बच्चों

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 13 6/24/2019 11:34:02 AM

के बदले रुपयों की माँग की गई होगी, एक लाख, दो लाख, पाँच लाख—ये माँगें कितने भी रुपयों की हो सकती हैं।

मास्टरजी ने हाथ में लिफाफे पकड़ने चाहे, लेकिन डाकू का डर अभी भी उन पर भूत की तरह सवार था।

थर-थर काँपते उनके हाथों में लिफाफे टिकें, तब न। दोनों लिफाफे हाथ से छूटकर पेड़ के पत्तों की तरह हवा में तैरते हुए फर्श पर जा गिरे।

डाकू ने जग्गू और नीलू से कहा, “चलो, बच्चो! अब कुछ दिन तुम दोनों हमारे मेहमान रहोगे।”



nbt.india

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 14 6/24/2019 11:34:03 AM

दोनों चल पड़े, मानो चाबी से चलने वाले खिलौने हों। पीछे-पीछे मुँह ढँका आदमी था। स्कूल से बाहर आकर वह तो एक तरफ खिसक गया और डाकू बच्चों के साथ-साथ दूसरी तरफ चल पड़ा।

क़स्बे की सारी गलियाँ और सड़कें सुनसान हो चुकी थीं। कहीं-कहीं कुछ चेहरे खिड़कियों से झाँक भर रहे थे।

डाकू दोनों बच्चों को लेकर क़स्बे से बाहर वाले तालाब पर पहुँचा। वहाँ उसने जग्गू और नीलू को एक पेड़ के नीचे खड़ा कर दिया और बोला, "तुम दोनों यहाँ आराम करो। मैं एक-दो जल-मुर्गाबियों का शिकार करूँगा, आँख बचाकर खिसकने की कोशिश न करना।"

जग्गू ने अकड़कर कहा, "हम क्यों करेंगे? हम क्या कोई तुमसे डरते हैं!"

नीलू ने भी जग्गू का साथ दिया। "हम आदमियों से थोड़े ही डरते हैं। हम तो राक्षसों से डरते हैं।

डाकू अपनी बड़ी-बड़ी मूँछों पर ताव देता हुआ बोला, "अरे, हम भी तो बहुत बड़े राक्षस हैं।"

नीलू ने डाकू को ऊपर से नीचे तक देखा, और आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "तुम राक्षस हो तो बताओ तुम्हारे सींग कहाँ हैं? नानी कहा करती हैं कि राक्षसों के सिर पर दो बड़े-बड़े सींग होते हैं।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 15 6/24/2019 11:34:03 AM

3

चंबल के बीहड़

सींगों की बात पर डाकू को जो हँसी छूटी, तो वह कई मिनट तक हँसता रहा। इस बीच नीलू और जग्गू उसे इस तरह घूरते रहे मानो पूछ रहे हों कि उन्होंने ऐसी क्या अनहोनी बात कह दी।

उन्हें वहीं खड़ा करके डाकू तालाब के किनारे बैठ गया। उसकी आँखें तालाब के पानी पर फिसलती रहीं। पानी पर जल-मुर्गाबी तैरती हुई दिखाई दी।

धाँय!

बंदूक की गोली छूटी और जल-मुर्गाबी के खून से तालाब का पानी लाल हो गया। डाकू उसे निकालने के लिए तालाब में कूद पड़ा। नीलू की आँखें जल-मुर्गाबी का तड़पना न देख सकीं। उसने मुँह बिचकाया और मुँह फेरकर खड़ी हो गई।

"ऐ जग्गू!"

"क्या है?"

"इसका निशाना तो बहुत तेज है, रे!"

"मालूम है।"

"पर मास्टरजी इससे क्यों डर गए थे भला?"

"देखती नहीं, इसके पास बंदूक है?" जग्गू ने कारण बताया।

'यह हमें कहाँ ले जाएगा?" नीलू ने एकदम दूसरा सवाल किया।

"मुझे क्या मालूम?" जग्गू ने खड़तल उत्तर दिया।

"यह हमें अपने साथ क्यों ले जा रहा है?"



nbt.india
एकः सूते सकलम्

"नहीं मालूम।"

"तुझे कुछ मालूम भी है?" चिढ़कर नीलू ने कहा।



nbtindia
एकः सूते सकलम्

"देख, री नीलू...!"

"शी-ई-ई-ई!" सहसा नीलू ने जग्गू को चुप्पी साध लेने का संकेत किया।

जग्गू ने भी देखा—चार डाकू उन्हीं की तरफ बढ़े चले आ रहे थे। सबका हुलिया आपस में इतना मिलता-जुलता था कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करके पहचान पाना भी मुश्किल था।

नीलू और जग्गू के पास से होकर चारों डाकू तालाब के किनारे चले गए, जहाँ उनका पाँचवाँ साथी जल-मुर्गाबी लिए पानी से बाहर निकल रहा था।

उन सबने और भी कई जल-मुर्गाबियों का शिकार किया। फिर उन्होंने मरे हुए पक्षियों को एक थैले में भरा और उस पेड़ तक आए, जहाँ नीलू और जग्गू खड़े थे।

"चलो!" एक डाकू कटे ढोल-जैसी आवाज में गरजा।

"अरे, बच्चे हैं। इतना ज़ोर से न डाँटो कि डर जाएँ।" वह डाकू उनके लिए लाड़ दिखाता हुआ बोला, जो उन्हें साथ लेकर यहाँ तक आया था।

दोनों बच्चे डाकुओं के साथ-साथ चल पड़े। इस समय वे क़स्बे की सीमा के साथ-साथ चल रहे थे। इसी रास्ते पर पड़ता था बड़ वाले काका का आम का पेड़। बच्चे स्कूल से भागकर इस पेड़ से आम तोड़ने आया करते थे। एक बेचारा पेड़ और तीन-सौ बच्चों का हमला! इस पेड़ पर कभी भी आम देखने को न मिलता था। आम पकते बाद में थे, तोड़ पहले लिए जाते थे।

नीलू और जग्गू ने कई दिन पहले इस पेड़ पर दो कच्चे आम देखे थे। दोनों बड़ी बेचैनी से उनके पकने का इंतज़ार कर रहे थे। यह टोली आम के पेड़ के नीचे से गुजरी, तो नीलू खुशी से चहक उठी—"ऐ जग्गू!"

"दीख रहे हैं। दोनों पक गए हैं।" जग्गू ने पेड़ की पत्तियों के बीच नज़र टिकाकर कहा।

"ठहरो, ठहरो!" नीलू ने डाकुओं को रोका।

एक ने पूछा—"क्यों, क्या हुआ?"

"आँख के अंधे हो! दीखता नहीं, हमारे आम पक गए हैं। हमें इन्हें तोड़ना है।" नीलू ने बताया।

"आम! इस पेड़ पर आम कहाँ!" डाकू ने पेड़ को देखते हुए कहा।

"तुम तो सचमुच अंधे ही हो!" नीलू ने पेड़ की घनी पत्तियों में एक तरफ उँगली उठाकर दिखाते हुए कहा।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 18 6/24/2019 11:34:04 AM

डाकू को भी हरे पत्तों के बीच एक पीला-सा आम चमकता दिखाई पड़ने लगा। जाने क्या सोचकर उसने आम की तरफ बंदूक का निशाना साधा।

“ठहरो! तुम बहुत जल्दी मचाते हो। आम जल-मुर्गाबी नहीं है, जो बंदूक से मर जाएगा। इसे जग्गू ढेले से अभी तोड़ लेगा।” नीलू ने समझाया।

जग्गू ने इसी बीच कई ढेले इकट्ठे कर लिए थे। उसने आम की तरफ निशाना साधा। उसका ढेला छूटने से पहले ही धाँय की आवाज हुई और आम टूटकर नीचे आ गिरा।

डाकू ने कड़कदार लहज़े में कहा, “जाओ, उठा लो।”

नीलू आम उठाते हुए बोली, “अकड़ते क्यों हो? बंदूक की गोली से तो आम सभी तोड़ सकते हैं। ढेले से तोड़कर दिखाओ तो जानूँ। ढेले का निशाना तो जग्गू ही लगा सकता है।”

डाकू हँसा। “छोकरी, तू बहुत चंठ है। पहले बोलती थी, मैं बंदूक से आम नहीं तोड़ सकता, अब कहती है, बंदूक से आम तोड़ने में कौन-सी बहादुरी है। दाएँ भी, बाएँ भी।”

“ख़बरदार, जो मुझे छोकरी कहा। मेरा नाम है नीलकमल। नीलकमल नहीं कह सकते तो नीलू बोलो। नीलू मेरा घर का नाम है। तुम मुझे नीलू कहोगे तो मैं बुरा नहीं मानूँगी।”

डाकू मानो उसे मनाते हुए बोला, “अरे, तो इसमें नाराज़ होने की क्या बात है? मैं तुम्हें नीलू ही कहूँगा। अब कहो तो दूसरा आम ढेला मारकर तोड़ दूँ।”

“तुम दूसरा आम तोड़ दोगे तो मैं तुम्हारा निशाना जग्गू से अच्छा मान लूँगी।”

लगता था मानो उस डाकू को नीलू से अच्छा निशानेबाज़ होने की डिग्री लेनी थी। वह ढेले लेकर दूसरा आम तोड़ने पर जुट गया। पहला ढेला आम से एक मीटर दूर से होकर निकल गया। नीलू हँस पड़ी।

दूसरा ढेला पहले से भी ज्यादा दूरी से होकर गया। नीलू तालियाँ पीटने लगीं। फिर तीसरा ढेला भी पहले के रास्ते गया।

जग्गू एक तरफ खड़ा यह निशानेबाजी देख रहा था। दो-चार और ढेले फेंककर डाकू ने हार मान ली। नीलू पास खड़े जग्गू से बोली, “लो, अब तुम अपनी निशानेबाजी का कमाल दिखाओ।”

nbt.india एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 19 6/24/2019 11:34:04 AM

जग्गू ने डाकू से कहा, “ढेले से आम तोड़ना हर किसी के बस की बात नहीं होती।”

जग्गू ने निशाना साधकर ढेला छोड़ा, तो आम खट् से टूटकर नीचे आ गिरा।

नीलू ने डाकू को चिढ़ाया, “देखा, मैंने कहा न था!”

दूसरा डाकू हँसकर पहले के कान में बोला, “इसके बाप ने रुपया न दिया, तो हम इसे अपने दल में शामिल कर लेंगे—क्या खयाल है?”

दोनों डाकू हँस पड़े।

नीलू और जग्गू उनकी बातचीत से बेख़बर आम चूसने में मगन थे।

पाँच मिनट बाद डाकू एक झाड़ के पास पहुँचे, जिसके पीछे उनकी जीप खड़ी थी।



nbt.india

दोनों बच्चों सहित पाँचों डाकू जीप में लद गए। जीप चल पड़ी। कुछ दूर आगे जाकर जीप ने मुख्य सड़क छोड़ दी। अब डाकू लोग ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। जीप सवार सभी लोग हिचकोले खा रहे थे। नीलू बार-बार जग्गू के ऊपर गिर पड़ती थी। रास्ते के दोनों ओर मिट्टी के ढूह लगे हुए थे। चारों ओर वे नन्ही-नन्ही पहाड़ियों की तरह इस प्रकार छाए हुए थे कि पास से भी जीप को देखना कठिन था।

एक कंदरा-सी जगह में पहुँचकर उस डाकू ने जीप रोक दी, जो उसे चलाता ला रहा था। सारे डाकू नीचे उतर आए। नीलू और जग्गू भी।

उसके बाद डाकुओं ने पैदल चलना शुरू किया। टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों पर रास्ता नापती टोली अंत में एक सपाट जगह जा पहुँची, यहाँ मटमैले रंग के तंबू गड़े थे। उन तंबुओं के निकट ही एक सफेद रंग का घोड़ा बँधा हुआ था।

टोली को देखकर घोड़ा हिनहिनाया। घोड़े का हिनहिनाना सुनकर तंबू में से एक और डाकू निकलकर बाहर आया। डीलडौल से ही पता चलता था कि वह उन सब डाकुओं का मुखिया था।

"जग्गू रे, यह तो बड़ा खतरनाक आदमी मालूम होता है।" नीलू ने सहमकर कहा।

जग्गू की अपनी ही सिट्टी-पिट्टी गुम थी। वह बोला, "चुप रह! इस वक्त चुप रहने में ही अपनी भलाई है। मेरा खयाल है कि यह आदमी इन सबका सरदार है।"

एक डाकू ने सरदार के सामने आदर से सिर झुकाकर कहा, "ले आए, काका।"

अब सरदार नीलू-जग्गू की ओर घूमा, और बोला, "तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं हुई, बच्चो! इनमें से किसी ने तुम्हें तंग किया हो तो बताओ। मैं अभी उसका कान पकड़कर मुर्गा बना दूँगा।"

डाकू लोग हँसे। सरदार भी हँसा। नीलू का साहस बँधा। नीलू ने पूछा, "आप हमें यहाँ क्यों लाए हैं?"

मुखिया काका ने उत्तर दिया, "सच बता दूँ, बेटी? हमें कुछ रुपयों की जरूरत थी। मैंने तुम्हें इसलिए पकड़वाकर मँगाया कि तुम्हारे माँ-बाप पैसा देकर तुम्हें छुड़ा लें।"

"कितना पैसा?" नीलू ने पूछा।

"तुम इतने प्यारे-प्यारे बच्चे हो। तुम्हें छोड़ने का कम-से-कम पाँच-पाँच हजार रुपया तो लेंगे ही।"

nbt.india एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 21 6/24/2019 11:34:05 AM

केवल दस हजार रुपया!

जग्गू ने कहा, "आपको दस हजार रुपयों की जरूरत थी तो आप जाकर पिताजी से तो माँग लेते।"

नीलू भी चहकी। "हाँ, काका! जग्गू के पापा जरूरत पड़ने पर सबको रुपया देते हैं। बस, उसका ब्याज भर लेते हैं।"

नीलू के मुँह से अपने लिए 'काका' शब्द सुनकर मुखिया के मुँह पर खुशी की लहर दौड़ गई। लेकिन अगले ही पल उसकी खुशी उदासी में बदल गई।

"बेटी।" मुखिया ने कहा, "अगर हम उनसे रुपया उधार लेने जाएँगे, तो वह हमें पुलिस से पकड़वा देंगे। हम डाकू हैं न!"

नीलू ने फौरन इस समस्या का भी आसान-सा हल पेश कर दिया।

"काका, जग्गू के पिताजी तुम्हें पुलिस से पकड़वाएँगे, तो मैं पिताजी से बोलकर तुम्हें छुड़वा दूँगी। मेरे पिताजी थानेदार हैं। तुम डाकू हो तो क्या हुआ? मुझे तो तुम अच्छे लगते हो। हाँ, तुम्हारी मूछों से मुझे बड़ा डर लगता है।"

डाकुओं ने एक ठहाका लगाया। इस ठहाके से सारा बीहड़ जैसे गूँज उठा।

काका नीलू और जग्गू को अपने तंबू में ले गया। उसने दोनों के स्वागत की पूरी तैयारी कर रखी थी। एक बक्से में उनके लिए कपड़े और खिलौने भरे पड़े थे। नीलू और जग्गू उस बक्से को खोलकर उसका सामान उलटने-पलटने में लग गए।

काका ने बड़े प्यार से उन्हें समझाया, "तुम दोनों जहाँ चाहो, घूम-फिर सकते हो। कोई तुम्हें नहीं टोकेगा। हाँ, इतना ध्यान रखना कि ज्यादा दूर न निकल जाओ। माँ चंबल ने अपने रास्ते बदल-बदलकर हम लोगों के लिए ये बीहड़ बना दिए हैं। इस बीहड़ में पुलिस की कोई टोली हमारी सूँघ भी नहीं पा सकती। अगर तुम लोग इस बीहड़ में भटक गए, तो तुम्हें भी कोई नहीं ढूँढ़ सकेगा। हम भी नहीं।"

मुखिया बाहर निकल गया।

नीलू और जग्गू अकेले रह गए।

nbt.india एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 22 6/24/2019 11:34:05 AM

4

नीलू चीख पड़ी

काका के चले जाने के बाद नीलू ने जग्गू से पूछा, "काका क्या बता रहे थे? उनकी माँ ने उनके लिए क्या बनाया है?"

"माँ ने नहीं, चंबल ने ये ऊबड़-खाबड़ रास्ते बनाए हैं ताकि डाकू लोग यहाँ छिप सकें।"

"मुझे पक्का याद है, काका ने कहा था कि माँ ने ये रास्ते बनाए हैं।"

"माँ नहीं, चंबल।"

"चंबल कौन?"

"चंबल नदी का नाम है। भूगोल के मास्टरजी ने पढ़ाया तो था कि नदियाँ अपने रास्ते को धीरे-धीरे काटती रहती हैं। और बरसात के दिनों में रास्ता बदल देती हैं...।"

"अरे, तू तो बड़ा तेज है, रे जग्गू!" नीलू उछलकर बोली, "मुझे भी याद आ गया। काका ने कहा था कि माँ ने रास्ता बदल-बदलकर उनके लिए यह छिपने की जगह बनाई है। यहाँ से भागना कब है, जग्गू?"

जग्गू का पैर जैसे जलते अंगारों पर जा पड़ा हो। वह चमककर बोला, "अरे हाँ, भागना भी तो है। पर हम यहाँ से भाग सकते हैं!"

"क्यों, क्या तुम रास्ता भूल गए?"

जग्गू झेंप गया। बोला, "रास्ता था भी तो कितना टेढ़ा-मेढ़ा!"

नीलू बोली, "चलो, कोई बात नहीं। रास्ता तो मुझे भी याद नहीं रहा।"

"जब तक हमारे पिताजी इन लोगों को पाँच-पाँच हजार रुपये नहीं देंगे, ये हमें नहीं छोड़ेंगे। हमें कई दिन यहाँ रहना पड़ेगा।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

"मेरे पिताजी को तो जब पता चलेगा कि मैं डाकुओं के पास हूँ, तो वे एकदम पाँच हजार रुपया लेकर मुझे लेने के लिए दौड़े चले आएँगे।"

"वह तो मेरे पिताजी भी दौड़े आएँगे।"



Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 24 6/24/2019 11:34:06 AM

"हो सकता है, मेरे पिताजी और तुम्हारे पिताजी दोनों इकट्ठे ही यहाँ आएँ।"

जग्गू ने माना। "हाँ, यह भी हो सकता है।"

डाकुओं ने जो खाना तैयार किया था, वह घर के खाने से किसी तरह कम नहीं था। उनकी बनाई खीर तो बहुत ही स्वादिष्ट थी। खाते रहो और लार टपकाते रहो। नीलू और जग्गू ने भी डटकर भोजन किया।

प्रश्न यह उठा कि सोने से पहले क्या किया जाए। जग्गू और नीलू ने फिलहाल भागने का इरादा छोड़ दिया। एक खेल ऐसा था, जो उस समय आराम से खेला जा सकता था—आँख-मिचौली। वहाँ छिपने की जगहें इतनी ज्यादा थीं कि ढूँढ़ने वाले की नाक में दम आ जाए।

दोनों को आँख-मिचौली खेलने में खूब मज़ा आया।

फिर दोनों ही थककर सो गए।

रात को नीलू ने एक अजीब-सा सपना देखा। उसने देखा कि वह और जग्गू डाकुओं के बीच रहते-रहते बड़े हो गए हैं। उनके पिताजी उन्हें रुपया देकर छुड़ाने नहीं आए थे। एक दिन दोनों ने तय किया कि उन्हें स्वयं ही डाकुओं की कैद से निकल भागना चाहिए। बस, फिर क्या था, दोनों रात को अपने-अपने बिस्तर से उठे। जग्गू ने काका की तलवार संभाली और आगे-आगे वह, पीछे-पीछे नीलू—दोनों ने जंगल का रास्ता पकड़ा। बड़े मज़े में गप्पें मारते चले जा रहे थे कि अचानक एक गर्जना सुनाई पड़ी। नीलू काँप उठी। उसने जो नज़र उठाई, तो क्या देखती है कि सामने एक बब्बर शेर खड़ा है। उसने नीलू की तरफ अपने भयानक दाँत निकाले, और नीलू चीखकर जग पड़ी।

जग्गू भी उसकी चीख सुनकर जग उठा। कुछ दूरी पर लेटा मुखिया काका भी। उसकी समझ में नहीं आया कि वह उस समय कहाँ थी। चारों तरफ चाँदनी छिटकी हुई थी। उस चाँदनी में बीहड़ कितने सुंदर दिखाई पड़ते थे। मगर वे डरावने भी उतने ही थे। धीरे-धीरे नीलू को सब याद आ गया। वह आँखें टिमटिमाते हुए बोली, "काका, मैंने एक बहुत बुरा सपना देखा है।"

"कैसा सपना?" काका ने पूछा।

"सपने में मुझे एक शेर खाने को आ रहा था।"

nbt.india एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 25 6/24/2019 11:34:06 AM



nbt.india
एकः सूते सकलम्

"मेरे होते किस शेर की मजाल है, जो मेरी बिटिया की ओर टेढ़ी आँख से भी देख सके! ले, थोड़ा पानी पी ले, फिर बुरे सपने नहीं आएँगे।" काका ने अपने हाथ से सुराही से पानी का गिलास भरकर नीलू को दिया।

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 26 6/24/2019 11:34:07 AM

पानी पीकर नीलू फिर सो गई।

सुबह काका उठा, तो सबसे पहले उसकी निगाह जग्गू और नीलू के बिस्तरों पर पड़ी। दोनों ही अपने-अपने बिस्तरों पर मौजूद नहीं थे। थरथराए-से काका ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई। वे कहीं भी तो दिखाई नहीं पड़ रहे थे।

"नीलू बिटिया!" काका ने आवाज दी।

"नीलू बिटिया!" मिट्टी के ढेलों से टकराकर आवाज की गूँज आई।

जवाब नदारद था।

तब एक गिरोह के दो-तीन अन्य सदस्य भी वहाँ आ गए। काका बोले, "मुझे लगता है कि उन लोगों ने भागने की बेवकूफी कर ही डाली। लेकिन वे अभी ज्यादा दूर नहीं गए होंगे। तुम सब चारों तरफ उन्हें ढूँढ़ने जाओ। उन्हें साथ लिए बिना न लौटना। जिसे भी वे मिल जाएँ, वह मोर की आवाज मुँह से निकाले, जिससे बाकी लोग अपनी खोज बंद करके वापस लौट आएँ।" मुखिया का हुक्म था।

एक के बाद एक पूरे गिरोह के डाकू बीहड़ में गायब हो गए। काका का मन बेचैन हो रहा था। यदि दोनों बच्चे कहीं दूर निकल गए, तो उनके हाथ नहीं आएँगे। फिर उन्हें इस जन्म में तो बीहड़ से बाहर निकलने का रास्ता मिलेगा नहीं। परिणाम यह होगा कि फूल से कोमल दोनों बच्चे भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर जान दे देंगे। उनके गले प्यास से सूख रहे होंगे, किंतु उन्हें पानी मिलेगा कहाँ!

काका पसीने से तरबतर हो गया। अपनी ज़िंदगी में इतनी चिंता उसे कभी नहीं हुई थी। पानी पीने के लिए काका अपने खेमे में घुसा।

जैसे ही काका ने खेमे का परदा उठाया, नीलू ने 'हाऊ' कहकर उसे डराना चाहा।

काका ने नीलू को देखा, तो उसे छाती से लगा लिया।

"अरे, तू कहाँ छिपी बैठी है! सारे जन तुम लोगों को बीहड़ों में ढूँढ़ रहे हैं।"

"क्यों ढूँढ़ रहे हैं? हम कोई नन्हे-मुन्ने बच्चे थोड़े ही हैं, जो रास्ता भूल जाएँगे।" नीलू ने अकड़कर कहा।

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 27 6/24/2019 11:34:07 AM

काका हँसा। "वह तो मुझे पता है। मैं समझा था कि तुम दोनों यहाँ से बचकर भाग निकले हो।"

"हम क्यों भागेंगे? हम कोई तुमसे डरते हैं।" नीलू की अकड़ ज्यों-की-त्यों बनी रही।

काका बोला, "जानता हूँ, जानता हूँ। हमारी बिटिया किसी से डरती थोड़े ही है। बस, सपने में शेर देखकर जरूर डर जाती है थोड़ा-सा!"

नीलू ने कहा, "मैं अपने लिए थोड़े ही डरी थी, काका। सपने में जग्गू भी तो मेरे साथ था। जग्गू के हाथ में तलवार भी थी। मगर जब शेर इस पर झपटा, तो डर के मारे मेरी चीख निकल गई।"

इस पर जग्गू ने कहा, "इसमें डरने की क्या बात थी? मैं तलवार से शेर के टुकड़े-टुकड़े कर डालता।" काका हँस पड़ा। नीलू बुरा मान गई।

"इसमें हँसने की क्या बात है, काका? जग्गू सचमुच शेर के टुकड़े-टुकड़े कर डालता। तुमने अभी इसका निशाना देखा नहीं है, इसलिए हँस रहे हो न। जग्गू ढेला फेंककर आम के पेड़ पर सबसे ऊपर लटकते आम गिरा लेता है। यह बहुत बहादुर है, काका!"

उसी समय काका को याद आया कि गिरोह के दूसरे लोग बीहड़ों में इन दोनों बच्चों की तलाश कर रहे होंगे और बच्चे उनकी बगल में ही मौजूद थे। इसे कहते हैं—बगल में बच्चा शहर में ढिंढोरा। यहाँ बीहड़ों में ढिंढोरा पिट रहा था।

काका ने खेमे से बाहर निकलकर मुँह से मोर की आवाज निकाली।

एक-एक करके डाकू लौटने लगे।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 28 6/24/2019 11:34:07 AM

5

जबलपुर वाली दीदी

उसी समय गिरोह के एक जासूस ने ख़बर दी– "आज रतनपुर के सेठ गोपालदास की लड़की की विदाई हो रही है। लगभग 11 बजे कार काली माई के मंदिर के साथ वाली सड़क पर से गुजरेगी। लड़की के बदन पर डेढ़ लाख के जेवर हैं। कार में एक राइफ़ल वाला गोरखा भी होगा। कार में नगदी भी हो सकती है।

गिरोह के पास पैसा लगभग खत्म हो चला था। काका ने तुरंत सबको तैयार होने का हुक्म दिया।

एक डाकू ने जग्गू और नीलू की ओर संकेत करके पूछा, "इन दो शेखचिल्लियों का क्या होगा?"

काका ने कहा, "हरिया, तुम पीछे रहोगे इनकी देखभाल करने के लिए।"

जग्गू और नीलू ने जो सारे डाकुओं को तैयार होते देखा, तो वे भी काका तक दौड़े आए।

"काका!" जग्गू बोला।

"हाँ, हाँ, कहो।"

"हम भी आपके साथ चलेंगे।"

काका ने समझाया—"अरे, हम एक खास काम से जा रहे हैं, तुम्हारा साथ चलना ठीक नहीं।"

नीलू बोली, "काका, हमें सब पता है। तुम लोग डाका डालने जा रहे हो। हम भी साथ चलेंगे। हम भी देखेंगे कि तुम कैसे डाका डालते हो।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

काका भौंचक्का रह गया। उसने गिरोह के कई जनों के विरोध के बावजूद उन दोनों बच्चों को साथ ले लिया। गिरोह के साथ वे दोनों भी इस तरह फुदक-फुदक कर चल रहे थे मानो ननिहाल जा रहे हों।

काली माई के मंदिर से कुछ दूरी पर, एक मोड़ पर, पेड़ का मोटा तना काटकर सड़क पर डाल दिया गया। दुल्हन को लेकर आती सजी-धजी कार जैसे ही मोड़ पर मुड़ी, सामने तना आ गया। ड्राइवर ने पूरे ज़ोर से ब्रेक लगाया। कार चूँऊऊऊ कर आवाज करती हुई रुक गई।

कार में बैठा गोरखा गोलमाल समझ गया। उसने फुर्ती से राइफल की नली कार से बाहर निकाल ली। राइफल चलाने के बजाय उसका उद्‌देश्य यह था कि डाकू उसकी राइफल देखकर डर जाएँ।

धाँय!

हवा की तेजी से एक गोली आई और गोरखे की राइफल की नली से टकराई। एक तेज झटके के साथ राइफल गोरखे के हाथ से छूट गई। अगले ही क्षण झाड़ियों में छिपे डाकुओं ने कार को चारों तरफ से घेर लिया। डाकुओं के साथ जग्गू और नीलू भी थे। काका ने बड़े इतमीनान से आगे बढ़कर गोरखे के हाथ से राइफल के कारतूसों की पेटी ले ली और राइफल के लिए फिर हाथ बढ़ाया। गोरखे ने बिना चूँ-चपड़ किए दोनों चीज़ें काका के हवाले कर दीं। फिर वह टुकुर-टुकुर उसका मुँह देखने लगा।

कार में पिछली सीट पर दूल्हा-दुल्हन मौजूद थे। काका ने दूल्हे मियाँ से कहा, “बेटा, आमतौर पर मैं खुशी के मौके पर डाका नहीं डालता। लेकिन आज बड़ी मज़बूरी की-सी हालत में ऐसा करना पड़ा। बिटिया से बोलो कि सारे गहने उतारकर और नगदी हमारे हवाले कर दे।”

दूल्हे मियाँ ने जेब से सौ-सौ के नोटों की गड्डी निकालकर काका की ओर बढ़ा दी। “यह लीजिए, पूरे दस हजार हैं। अब आप कृपा करके हमें जाने दीजिए। मेरी धर्मपत्नी के गहने मत लीजिए। मेरी इज्ज़त का सवाल है।”

काका ने नोटों की गड्डी लेकर जेब में डाली और शांत स्वर में बोले, “इनसे हमारा काम नहीं चलेगा, बेटा। बिटिया से बोलो, गहने उतार दे।”

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 30 6/24/2019 11:34:08 AM

एक डाकू गरजा, "हुक्म हुक्म है। समझ..."

काका ने आँखें तरेरकर उस डाकू की ओर देखा। वह बीच में ही यों चुप हो गया मानो ग्रामोफोन के बजते रिकॉर्ड पर से सूई उठ गई हो।

दूल्हे ने काका के आगे फिर विनती की। काका जितने शांत थे, उतने ही दृढ़ भी थे। वह अपने निश्चय से जौ भर भी टस-से-मस नहीं हुए।

इधर तो काका और दूल्हे में बात चल रही थी, उधर जग्गू मियाँ ड्राइवर से उलझ गए।

"ऐ ड्राइवर!"

"जी, सरकार।" ड्राइवर ने दीन स्वर में कहा।

"नीचे उतरो।"



ड्राइवर दरवाजा खोलकर नीचे उतर आया।

"कार में कुछ मिठाई वगैरह भी है या नहीं? तुम लोग शादी में से आ रहे हो न?" जग्गू ने ड्राइवर से इस तरह धीमे स्वर में पूछा, मानो बड़े रहस्य की बात हो।

ड्राइवर ने उत्तर दिया, "पूरी डिग्गी मिठाई से भरी है, मालिक।"

"भरी है, तो दो टोकरे निकालकर हमें दे दो।"

ड्राइवर ने बिना चूँ-चपड़ के जाकर डिग्गी खोली और दो के बजाय चार टोकरे निकालकर जग्गू के हवाले कर दिए। सारे डाकुओं का ध्यान काका की ओर लगा हुआ था कि वह क्या हुक्म देते हैं? काका के आँख के इशारे की देर थी। तुरंत एक दर्जन गोलियाँ दूल्हे के शरीर में घुस जातीं। डाकुओं में से किसी ने गौर ही नहीं किया कि जग्गू ने डाके में डाका डालकर मिठाई हथिया ली है।

मिठाई के टोकरे हाथ आ गए तो नीलू बोली, "ऐ ड्राइवर!"

"जी, मेम साहब!"

"हम दुल्हन को देखना चाहते हैं। इससे कहो कि जरा घूँघट उठाए, बस थोड़ा-सा। काका से शर्म लगती है, तो मुँह मेरी तरफ कर ले।"

ड्राइवर ने सिर घुमाकर नीलू की फरमाइश मालकिन तक पहुँचा दी। मालकिन की क्या मजाल जो नीलू का हुक्म मानने से इनकार कर देती। दुल्हन ने अपना चेहरा कार की खिड़की से बाहर निकाला और घूँघट उठा दिया। नीलू एकटक उसे देखती रही। जग्गू ने भी धीरे-धीरे दुल्हन को देख ही लिया।

उसी समय दूल्हे ने दुल्हन को कंधे से हिलाते हुए कहा, "रानी, अपने सारे गहने उतारकर इनके हवाले करो। जान बची रही, तो गहने और बन जाएँगे। हमें गहने इन्हें देने होंगे।"

दुल्हन चुपचाप अपने गहने उतारने लगी।

बिजली के झपाके की तरह नीलू ने कार का दरवाजा खोला और गहने उतारती दुल्हन का हाथ पकड़ लिया। वह काका से बोली, "काका, मैं तुम्हें इसके गहने नहीं लेने दूँगी।"

काका ने समझाया, "गहने बहुत जरूरी चाहिए, बेटी।"

"किसलिए चाहिए?" नीलू ने पूछा, "तुम गहने कहाँ पहनते हो? तुम्हारे पास काकी भी तो नहीं है, जो गहने पहनेंगी।"

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 32 6/24/2019 11:34:09 AM

काका के चेहरे पर भी हँसी की रेखा फूट पड़ी। वह बोले, "अब मैं तेरी काकी भी लाऊँगा, बेटी। उसके लिए तो गहने चाहिए ही।"

"काकी अपने गहने अपने घर से ले आएगी।" नीलू ने कहा।

एक डाकू ने दुल्हन को डपटा, "ऐ, बच्ची की बातों पर मत जाओ। गहने उतारो, वरना हम सारे गहने जबरदस्ती उतार लेंगे।"

"ठहरो।" हवा में जग्गू की आवाज गूँज उठी।

सबने चौंककर जग्गू की तरफ देखा। उसके दोनों हाथों में दो पत्थर थे।

"जिसने भी दुल्हन के गहने उतारने की कोशिश की, मैं पत्थर मारकर उसकी आँखें फोड़ दूँगा। तुम लोग आम के पेड़ पर मेरा निशाना देख ही चुके हो।"



nbt.india
एक सूत्र संकलनम्

काका ने जग्गू की तरफ देखा– फिर उन पत्थरों को भी देखा, जो उसके हाथों में थे। दोनों पत्थर इतने बड़े जरूर थे कि किसी की भी आँख बड़े मज़े में फोड़ सकते थे। काका परेशान-से होकर बोले, "तुम्हें भी गहने उतरवाने पर ऐतराज़ है?"

जग्गू ने कहा, "जब नीलू ऐसा नहीं चाहती, तो मैं भी नहीं चाहता।"

नीलू ने बताया, "काका, यह दुल्हन एकदम मेरी दीदी जैसी लगती है।"

जग्गू ने उसकी हाँ-में-हाँ मिलाई। "हाँ, जबलपुर वाली दीदी जैसी।"

काका बड़ी विचित्र स्थिति में फँस गए थे। वह बच्चों को भी नाराज़ नहीं करना चाहते थे और उस समय उनके गिरोह को धन की जरूरत थी। सहसा उन्हें एक राह सूझी। वह एक डाकू के कान में धीरे से बोले, "मैं बच्चों को लेकर वापस चलता हूँ। तुम लोग पीछे से कार में से हरेक काम की चीज़ लूट लेना। लेकिन दुल्हन का बदन कोई न छुए, समझे?"

काका दिखावे में झुँझलाकर जग्गू-नीलू से बोले, "ऐसी-की-तैसी तुम्हारी जबलपुर वाली दीदी की! उसने तो जबलपुर में बैठे-बैठे हमारी सारी मुहिम चौपट कर डाली। चलो, वापस चलो। हरिया, तुम दूल्हे-दुल्हन को यह खतरनाक रास्ता पार कराके आओ।"

काका जग्गू-नीलू और अन्य साथियों को साथ लेकर लौट रहे थे। उनके मन में जैसे काँटा-सा चुभ रहा था—अपने झूठ के कारण। वह सोच रहे थे कि अगर मैं सचमुच ही दुल्हन को बख़्श देता तो क्या हो जाता? तब गिरोह में फूट पड़ जाती। गिरोह के दूसरे लोग यही कहते कि काका का दिमाग फिर गया है। बच्चों के कहने में आकर डेढ़ लाख का माल हाथों से निकाल दिया।

जग्गू और नीलू जितने प्रसन्न आज थे, उतने शायद कभी भी न हुए थे। आज के डाके में गहरा माल उनके हाथ लगा था। मिठाई के पूरे चार टोकरे! ये टोकरे अब साथ के दोनों डाकुओं के सिरों पर लदे हुए थे, क्योंकि उन्हें लिए बिना जग्गू और नीलू टस-से-मस नहीं हो रहे थे। नीलू को तो सबसे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि उसमें जबलपुर वाली दीदी जैसी एक दुल्हन के गहने उतरने से बचा लिए थे।

यह अलग बात थी कि कहीं दूर उस समय वही दुल्हन रोती-पीटती अपना एक-एक गहना उतारकर डाकुओं के हवाले कर रही थी।

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 34 6/24/2019 11:34:10 AM

6

नीलमपरी की कहानी

उसके तीसरे दिन चंबल के घने बीहड़ जंगलों में एक विचित्र ही दृश्य दिखाई पड़ रहा था!

जाने कहाँ से राह भटककर एक तितली वहाँ आ निकली। जग्गू उस तितली को पकड़ने दौड़ा। जग्गू के पीछे नीलू दौड़ी। नीलू के पीछे काका दौड़े। दृश्य यह था कि आगे-आगे तितली उड़ी जाती थी। उसके पीछे जग्गू बगटुक दौड़ रहा था। जग्गू के पीछे नीलू और काका लगे थे। जैसे चारों में रेस लगी हो। काका भी आजकल खूब प्रसन्न थे। कार वाले डाके में दो लाख से ऊपर का माल उनके हाथ लगा था।

आखिर जग्गू ने तितली पकड़ ही ली—और रेस खत्म हो गई।

काका ने पूछा, "क्या करेगा तू इस तितली का?"

"मैं बताऊँ?" नीलू बोल पड़ी, "जग्गू तितली के बदन में पिन चुभोकर उसे मार देगा। इस तितली को ब्लॉटिंग पेपर पर लगाकर सुखा लेगा और फिर अपने एलबम में लगा लेगा। यह बहुत पापी है, काका।"

काका बोले, "अरे वाह! इसमें पापी होने की क्या बात है? सुंदर चीज़ों को एलबम में तो लगाते ही हैं।"

"तितलियों की जान लेना बहुत बड़ा पाप होता है।" नीलू ने कहा, "तुम्हें पता है काका, कई तितलियाँ परी भी होती हैं।"

काका ने आश्चर्य से पूछा, "क्या कहा? तितलियाँ परी होती हैं। सच, मुझे तो इसका बिल्कुल भी पता नहीं। भला, नन्ही-सी तितली इतनी बड़ी परी कैसे हो सकती है?"

एकः सूते सकलम्

"तुम्हें तो कुछ भी पता नहीं, काका। तुम बहुत भोले हो। परी के हाथ में जादू का डंडा होता है। उसे घुमाकर परी जो चाहे हो सकती है।"

"डाकू भी बन सकती है?"

"हाँ, डाकू भी बन सकती है।"

"तितली भी बन सकती है?"

"परी को कुछ और न बनना हो, तो तितली बनकर ही तो नाचती है।"

"अच्छा, नीलू बेटी, जब परी तितली बन जाती है, तो उसे तितली से वापस परी में बदलने के लिए जादू का डंडा कौन घुमाता है?" काका ने पूछा।



बड़ा टेढ़ा सवाल था।

नीलू सोच में पड़ गई। जब परी स्वयं तितली बन चुकी हो, तो जादू का डंडा कौन घुमाएगा भला? इससे भी बड़ी बात तो यह है कि परी इस बीच जादू का डंडा रखती कहाँ है?"

जग्गू ने मुश्किल आसान की। मैं बताऊँ, काका? परी चाहे तो जादू के ज़ोर से बिना डंडा घुमाए भी रूप बदल सकती है।"

"तो फिर डंडा पास में क्यों रखती है?" काका ने तपाक् से सवाल किया।

अब तो जग्गू भी निरुत्तर हो गया। वह नीलू से बोला, "हाँ, री नीलू, बिना जादू का डंडा घुमाए जादू का ज़ोर काम कैसे करेगा?"

"नीलू बिटिया, यह गुत्थी तो सुलझानी ही पड़ेगी।" काका ने कहा।

"अच्छा काका, मैं आपको नीलमपरी की कहानी सुनाती हूँ। फिर आप अपने आप ही सब कुछ समझ जाओगे।"

काका ने प्रसन्न होकर सहमति में गर्दन हिला दी।

खेमे के आगे बिछी एक चारपाई पर काका बैठ गए। उनकी गोद में नीलू आ टिकी और कहानी सुनाने लगी।

"एक भाई था। एक उसकी नन्ही-सी बहन थी। बहुत सुंदर।"

"हमारी नीलू बिटिया जितनी सुंदर।" काका ने मगन होकर कहा।

"नहीं, काका, मुझसे बहुत-बहुत सुंदर—पर बेचारी को एक बीमारी थी। वह कभी हँसती ही नहीं थी। भाई को हर समय यही चिंता लगी रहती थी कि मेरी बहन कभी हँसती नहीं है। वह हर समय इसी चिंता में घुलता रहता। एक दिन भाई एक तितली के पीछे दौड़ रहा था, जैसे जग्गू दौड़ रहा था। तितली उड़ती-उड़ती एक जंगल में जा घुसी।"

काका बोले, "जंगल में नहीं, चंबल के बीहड़ों में।"

नीलू बिगड़ खड़ी हुई, "कहानी मैं सुना रही हूँ या तुम?"

काका ने मानो माफी माँग ली—"अच्छा बाबा, तुम ही सुनाती हो। अब आगे सुनाओ।"

उसी समय हरिया काका से कुछ कहने आया और सारा कहना-सुनना भूलकर नीलू की कहानी सुनने लगा।

nbt.india
एक: सूते संकलम

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 37 6/24/2019 11:34:11 AM

नीलू ने कहानी आगे बढ़ाई—जंगल में पहुँचकर भाई ने तितली को पकड़ लिया। वह उस तितली को मारने ही जा रहा था कि तितली बोली, “ठहरो, मुझे मत मारो। मैं नीलमपरी हूँ।”

काका ने शंका प्रकट की—“तितली बोली!”

“वह साधारण तितली थोड़े ही थी, काका। वह तो नीलमपरी थी। भाई ने तितली को छोड़ दिया। और लो, उसके सामने तो नीलमपरी खड़ी थी। नीलमपरी की नीली आँखें होती हैं, नीले पंख होते हैं और वह कपड़े भी नीले ही पहनती है।”

हरिया बोला, “जरूर तुम्हारी यह नीलमपरी किसी नील के बर्तन में गिर गई होगी।”

नीलू नाराज़ हो गई, “तुम यहाँ से चले जाओ। तुम नीलमपरी का मज़ाक उड़ाते हो।”

काका ने इस हुक्म पर अपनी मोहर ठोंक दी। “हाँ, तुम हमारी बिटिया के सामने से एकदम दफ़ा हो जाओ। तुम्हारी यह मजाल कि तुम नीलमपरी की बेइज़्ज़ती करो!”

हरिया ने नीलू से माफी माँगते हुए कहा, “गलती हो गई, मेरी नन्ही सरकार। पर मुझे कहानी जरूर पूरी सुन लेने दो—बीच में बोले सो चोर।”

तभी फत्तू और बिरजू भी कहानी सुनने के लिए वहाँ आ टिके। उन सबको बैठा देखकर एक-एक करके दूसरे डाकू भी वहाँ आ जुटे। कुछ देर बाद पूरा गिरोह ही बैठा नीलमपरी की कहानी सुन रहा था।

नीलू ने जल्दी-जल्दी कहानी आगे बढ़ाई।

भाई बोला, “ऐ नीलमपरी, मेरी बहन हँसती नहीं है। उसका इलाज़ बता।” नीलमपरी बहुत दयालु होती है। वह सबके दुख दूर करती है। नीलमपरी ने कहा, “सतरंगे पहाड़ की ढलान पर एक लाल फल उगा है—फफानू। तेरी बहन की हँसी उसी फल में कैद है।”

काका से बिना बोले रहा न गया। “हँसी फल में कैद है! बड़ी अजीब बात लगती है।”

“मगर सच्ची है।” नीलू ने ज़ोर देकर कहा, “यह कहानी मेरी किताब में लिखी है और किताब में कोई झूठी बात थोड़े ही लिखी होती है। अब मुझे मत टोकना—नहीं तो मेरी कहानी कभी खत्म ही न होगी।”

काका बोले, “नहीं खत्म होगी, तो हम भी यहाँ से नहीं उठेंगे।”

कहानी आगे सरकी—“फफानू को लाना इतना आसान काम नहीं है, जितना तुम लोगों

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 38 6/24/2019 11:34:11 AM

के लिए डाका डाल लेना है। फफानू एक सीधी ढलान पर उगा था। भाई उस तक पहुँचे तो कैसे पहुँचे?"

जाने कौन डाकू बोला, "हाँ, बेचारा कैसे पहुँचे!"

उसी समय एक डाकू ने आकर काका से कहा, "एक खुशखबरी है, काका। ज़मींदार पाँच लाख...!"

काका ने उसका मुँह वहीं भींच दिया और जग्गू से बोले, "जग्गू बेटे, तुम्हारे पिताजी पाँच हजार रुपया देने के लिए राज़ी हो गए हैं। अब तुम हमारे पास दो-तीन दिन ही और रहोगे।"



Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 39 6/24/2019 11:34:12 AM

नीलू कहानी भूल गई। उसने पूछा, “और मेरे पिताजी?”

हरिया ने उत्तर दिया, “उनकी चिट्ठी आई है कि तुमने मेरी शैतान बेटी को अपने साथ ले जाकर मुझ पर बहुत उपकार किया है। मुझे अब उसकी परवाह नहीं है। कृपा करके उसे अपने पास ही रखो। मैं उसकी रोटी-वोटी का खर्चा देता रहूँगा।”

“तुम झूठ कहते हो। मेरे पिताजी ऐसा कभी नहीं लिख सकते।” नीलू ने अविश्वास के साथ कहा।

हरिया बोला, “तुम्हें अपने पिताजी का पता नहीं है। वह बहुत कंजूस आदमी हैं। तुम्हारे लिए पाँच हजार तो क्या, पाँच सौ रुपये भी नहीं देंगे। क्यों काका?”

नीलू हरिया की बात से संकोच में पड़ गई। इसमें कोई शक नहीं था कि उसके पिताजी बड़े कंजूस थे। नीलू इतने दिनों से एक गुड़िया लेने के लिए कह रही थी—छोटी-छोटी गुड़िया नहीं, आँख मटकाने वाली जापानी गुड़िया—मगर पिताजी ने लेकर नहीं दी थी। पर गुड़िया की बात और है—मैं तो गुड़िया नहीं हूँ। क्या पिताजी मेरे लिए भी कंजूसी करेंगे?

काका ने कहा, “नीलू बिटिया, तू किस सोच में पड़ गई? तू फ़िक्र मत कर। तेरे पिताजी पाँच सौ रुपया भी नहीं देंगे, तो भी मैं तुझे जग्गू के ही साथ भेजूँगा।”

जग्गू बोला, “हाँ, काका, यह ठीक होगा। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो नीलू मेरी याद में बीमार हो जाएगी और मैं नीलू को याद कर-करके बीमार पड़ जाऊँगा।”

नीलू चहकी, “यदि मैं तेरे साथ नहीं जाऊँगी, तो तुझे हिसाब के सवालों की नकल कौन टीपने देगा?”

जग्गू खिसिया गया। बात सच थी। नीलू हिसाब में बहुत तेज थी और जग्गू को नकल भी टीपने देती थी।

काका और गिरोह के दूसरे डाकू इस चख-चख का आनंद लूट रहे थे। उसी समय एक डाकू हाँफता हुआ दौड़ा चला आया।

“काका! काका!” उसने हाँफते-हाँफते ही कहा, “गजब हो गया।”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 40 6/24/2019 11:34:12 AM

7

अपनी-अपनी योजना

काका ने 15 वर्ष उन बीहड़ों में उस गिरोह के साथ काटे थे। वह अपने गिरोह के किसी आदमी का चेहरा देखकर ही समझ जाते थे कि वह कैसी ख़बर लाया होगा। उन्होंने अपने शांत-गंभीर स्वर में उस हाँफते हुए डाकू से पूछा, "यही कहना चाहते हो न कि कल्लन ने इस अड्डे का पता उगल दिया—या और कुछ?"

डाकू ने सिर झुकाकर कहा, "हाँ काका!"

कल्लन गिरोह का प्रमुख डाकू और काका का दायाँ हाथ था। पुलिस से पिछली मुठभेड़ ऐसी जगह हुई थी कि काका को कल्लन को उठा ले जाने का सुभिता ही नहीं मिल पाया था। घायल कल्लन पुलिस के हाथों में पड़ गया। काका ने इसीलिए पुलिस के थानेदार ब्रजराजसिंह की लड़की नीलकमल यानी नीलू का अपहरण किया था। साथ ही उनको ख़बर दे दी थी कि या तो वह घायल कल्लन को छोड़ दें, नहीं तो उनकी बेटी का खात्मा कर दिया जाएगा।

नीलू ने इस बीच काका के दिल में ऐसा स्थान बना लिया था कि काका का सारा दाँव ही उल्टा पड़ गया था। पिछली सारी रात जागकर वह यही सोचते रहे थे कि काश वह भी किसी कस्बे में किसी साधारण नागरिक की तरह अपने बाल-बच्चों के साथ रह रहे होते। दिनभर कहीं काम करते और संध्या समय बच्चों की भोली-भाली बातों से अपना मन बहलाते। लेकिन क्या अब यह संभव था?

नहीं—अब चंबल में बहुत पानी बह चुका था।

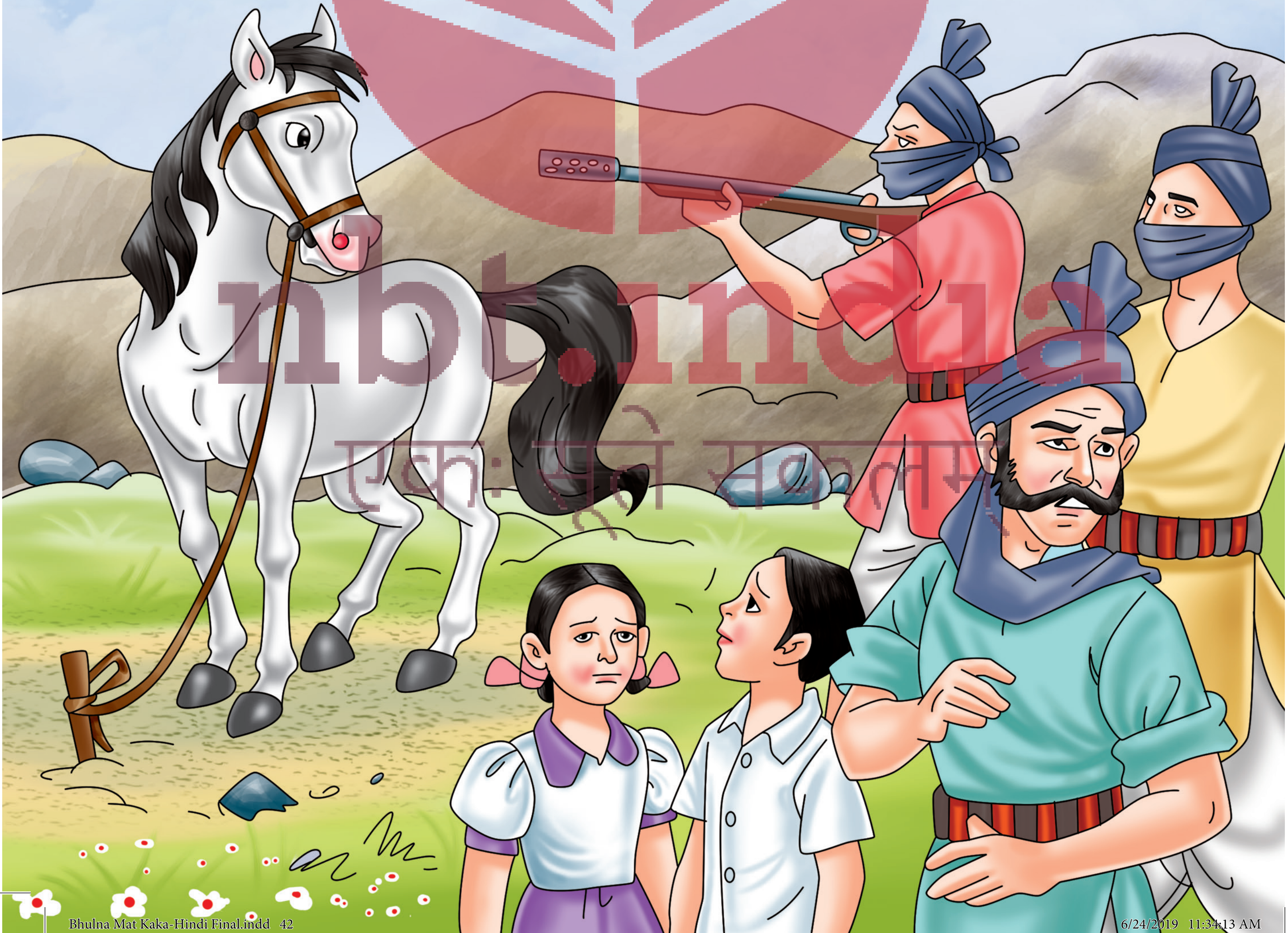
nbt.india एक: सूत्रे संकलन

उसी डाकू ने सूचना दी, “काका, हमें जल्दी ही कुछ करना होगा। पुलिस की टुकड़ी बहुत नज़दीक पहुँच चुकी है। डेढ़-दो घंटे के अंदर-अंदर हम यहीं पर घेर लिए जाएँगे।”

गिरोह के कई आदमी इस तरह उछले मानो उन्हें बिजली का करंट छू गया हो। काका को भी योजना बनाने में ज्यादा समय नहीं लगा।

“पुलिस का दल दक्खिन की तरफ से आ रहा है और वह सीधा उत्तर की ओर बढ़ेंगे। पश्चिम की ओर काफी इलाका मैदानी है। पुलिस दल का नेता सपने में भी नहीं सोच सकता कि हम लोग मैदान की तरफ भी भाग सकते हैं।”

यह योजना गिरोह के सभी सदस्यों के गले उतर गई। इस समय विरोध की कोई गुंजाइश नहीं थी। सिर पर खतरा मंडरा रहा था।



nbt.india
एकः सूते सकलम्

टोली जरूरत का सामान इकट्ठा करने में लग गई।

एक सदस्य ने पूछा, "तुम्हारे घोड़े का क्या होगा, काका?"

काका के पास दुर्लभ नस्ल का एक घोड़ा था। चंबल के बीहड़ों में वह तीर की तरह दौड़ता था। लेकिन बीहड़ तो बीहड़ ही थे। एक गड्ढे में गिरने से उसके अगले दोनों पैरों में खासी चोट आई थी। वह अब धीमे-धीमे ही चल सकता था—और वह भी जब पीठ पर कोई सवार न हो। काका ने बिना एक क्षण का भी आगा-पीछा किए हुक्म किया—"गोली मार दो!"

एक डाकू ने राइफल घोड़े की ओर सीधी की।

"ठहरो!" काका की आवाज गूँजी।

राइफल की नली झुक गई।

"क्या तुम राइफल चलाकर यहाँ तक पहुँचने में पुलिस की मदद करना चाहते हो?" कहकर काका ने कमर में खोंसा हुआ रिवाल्वर निकाला और उसकी नली पर साइलेंसर चढ़ाया। फिर उन्होंने उसके माथे पर निशाना साधकर एक-के-बाद एक तीन गोलियाँ दाग दीं।

घोड़े ने केवल एक पल आँखें खोलकर अपने स्वामी की ओर देखा। फिर इस तरह गिरकर आँखें सदा के लिए मूँद लीं, मानो उसे अपने स्वामी के हाथ मरकर स्वर्ग-लाभ हुआ हो।

काका ने वह करुण दृश्य न देख पाने के कारण मुँह फेर लिया।

चलने की तैयारी पूरी हो चुकी थी।

सबसे अलग एक कोने में जग्गू और नीलू अपनी खिचड़ी अलग पका रहे थे। उन्होंने काका के घोड़े का अंत नहीं देखा था।

"ऐ जग्गू!"

"हाँ, क्या कहती है?"

"हमारी भलाई इसी में है कि हम किसी तरह पुलिस तक जा पहुँचें।"

"अब तो हमें सबके साथ ही चलना पड़ेगा।"

"अब काका जाने कौन-से बीहड़ में जाएँ।"

"काका से बोलो कि हमें यहीं छोड़ जाएँ। पुलिस वाले हमें अपने आप ले जाएँगे।"

"काका ऐसा हर्गिज़ नहीं करेंगे।"

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 43 6/24/2019 11:34:13 AM

"क्यों?"

"उन्हें अभी तक हमारे घरों से रुपया जो नहीं मिला है। तुझे पता नहीं, ये डाकू लोग बहुत लालची होते हैं। बिना रुपया लिए किसी को भी नहीं छोड़ते। काका भी तो डाकू ही हैं।" जग्गू ने कहा।

"मेरे पिताजी ने तो अभी रुपया देने के लिए लिखा भी नहीं है। मुझे तो काका बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे।" नीलू ने आशंका के साथ कहा।

"काका के कहने से तो लगता था कि शायद वह पाँच सौ रुपया लेकर भी तुझे छोड़ दें। देख, मैं पहले छूट गया तो मैं अपनी गुल्लक तोड़ डालूँगा। उसमें अब तक पाँच सौ रुपये तो हो ही गए होंगे। वे मैं काका को देकर तुझे छुड़वा लूँगा। ठीक?"

"तेरी गुल्लक में पाँच सौ रुपये से तो ऊपर ही होंगे।" विस्मय से आँखें फाड़कर नीलू ने पूछा।

"हाँआँआँआँ! पाँच सौ रुपये से तो ऊपर ही होंगे।" जग्गू ने इतमीनान से कहा।"

"मेरे दिमाग में एक तरकीब आई है," नीलू ने चुटकी बजाकर कहा।

"तेरी सारी तरकीबें फँसाने वाली होती हैं। यह नई तरकीब भी बता।" जग्गू ने नाक चढ़ाकर कहा।

"हमें पुलिस की सहायता करनी चाहिए।"

"सहायता तो करनी चाहिए, पर कैसे?" जग्गू खीजकर बोला।

"पुलिस यहाँ आएगी तो उसे पता नहीं चल पाएगा कि डाकू चारों तरफ पैरों के निशान छोड़ने के लिए भेजे गए हैं। पुलिस वाले किन-किन निशानों को देखते फिरेंगे?" "काका का दिमाग बहुत तेज चलता है।" जग्गू बोला।

"मेरा दिमाग बहुत तेज चलता है।" नीलू ने कहा, "हम खेल-खेल में झाड़ियों की टहनियाँ और पत्ते रास्ते-भर तोड़-तोड़कर फेंकते जाएँगे। पुलिस वाले उनके सहारे-सहारे हम तक जा पहुँचेंगे।"

"हाँ, यह ठीक है। लेकिन हमें पत्तियाँ इस तरह तोड़नी पड़ेंगी कि किसी को कानोंकान पता न चले।" जग्गू ने कहा।

nbt.india एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 44 6/24/2019 11:34:13 AM

"हाँ, सो तो है।"

इस तरह काका की अपनी योजना के साथ-साथ एक और नन्ही-सी योजना पककर तैयार हो गई। डाकू लोग चारों तरफ पैरों के निशान बना आए थे। अब वे अपने निश्चित रास्ते पर कूच करने के लिए तैयार थे। बस, काका के हुक्म की देर थी।

काका ने हुक्म दिया। गिरोह चल पड़ा। नीलू और जग्गू मन-ही-मन अपनी योजना पर खुश थे। दोनों इस तरह उछलते-कूदते जा रहे थे, मानो मेला देखने जा रहे हों।



Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 45 6/24/2019 11:34:14 AM

काका ने पुलिस की योजना समझने में थोड़ी भूल कर दी थी। इस बार पुलिस ने उनके लिए बहुत बड़ा जाल फैलाया था।

पुलिस की दो भरी हुई लॉरियाँ बीहड़ के किनारे पर डेरा डाले खड़ी थीं। इसके अलावा, तीन-तीन सिपाहियों की दस टुकड़ियाँ बीहड़ों में डाकुओं की खोज करने गई हुई थीं। प्रत्येक टुकड़ी के पास एक वायरलैस सैट था। ये टुकड़ियाँ डाकुओं से उलझने के लिए नहीं बनाई गई थीं। इनका काम डाकुओं का पता लगाकर मुख्य कंट्रोल-रूम को ख़बर करना भर था। उसके बाद पुलिस पूरे दल-बल के साथ बताए हुए ठिकाने पर पहुँचकर डाकुओं पर हल्ला बोलने वाली थी।

डाकुओं के जाने के लगभग 15 मिनट बाद पुलिस की एक टुकड़ी उस स्थान पर पहुँची। मरे हुए घोड़े के माथे से निकलते खून से पुलिस की इस टुकड़ी को पता चल गया कि डाकू लोग कुछ देर पहले तक वहीं पर थे। सवाल यह था, वहाँ से वे गए किस तरफ होंगे।

पुलिस के तीनों जवान पूरे जोश-खरोश से जाँच-पड़ताल करने लगे।

"हैलो, कंट्रोल? हैलो, कंट्रोल?"

"येस, कंट्रोल स्पीकिंग—"

"मैं टुकड़ी नंबर आठ का नायक बोल रहा हूँ। सर, हमने डाकुओं के गिरोह का पता लगा लिया है। गिरोह कुछ देर पहले उस जगह पर था, जो हमने नक्शे में 'एक्स' अक्षर से दिखाई है। आपने नक्शा खोल लिया है?"

"हाँ, हाँ, कहते जाओ!"

"डाकू यहाँ से पश्चिम की ओर भागे हैं। जरूर उनके साथ अपहरण किए हुए दोनों बच्चे हैं। वे बच्चे रास्ते में टहनियाँ तोड़-तोड़कर फेंकते गए हैं। उनके लिए यह खेल रहा होगा, सर। पर हमें इससे उनका पता मिनटों में लग जाएगा।"

"जरा ठहरो... पश्चिम में तो बहुत-सा इलाका मैदानी है। डाकू लोग उधर नहीं जा सकते।"

"डाकू उधर ही गए हैं, सर! हो सकता है हमें चकमा देने के लिए वे खतरा उठाकर भी मैदानी इलाके में से होकर निकल भागना चाहते हों।"

nbt.india एक: सूत्र संकलन

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 46 6/24/2019 11:34:14 AM

"अच्छा, ठीक है। हम आगे से मैदानी इलाका घेर लेते हैं। तुम लोग उस जगह पहुँचो, जो नक्शे में 'जे' अक्षर से दिखाई गई है। हम सभी टुकड़ियों को 'जे' वाले स्थान पर इकट्ठा कर रहे हैं। तुम लोग अपनी तरफ से कोई गोलीबारी मत करना। 'जे' वाली जगह पर हमारे अगले ऑर्डर का इंतजार करो।"

"ओके, सर।"

"ओवर।"

बातचीत खत्म हो गई।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 47 6/24/2019 11:34:14 AM

8

अंतिम मुठभेड़

काका मैदान के किनारे तक पहुँच गए थे। अब सबसे कठिन यात्रा थी—दो सौ गज का मैदानी इलाका पार करना! काका ने आँखों पर दूरबीन लगाकर चारों तरफ का लंबा मुआयना किया। फिर संतोष की साँस लेकर उन्होंने साथी डाकुओं से कहा—“सावधानी से एक कतार में चलते हुए रास्ता पार करो। तेज-तेज कदम रखना!”

गिरोह बिना हिचक मैदान में उतर गया। जब वे मैदान के ऐन बीच में थे, सामने से गोलियों की एक बाढ़ छूटी। कोई डाकू नहीं गिरा, क्योंकि ये गोलियाँ उन्हें चेतावनी देने के लिए छोड़ी गई थी। पुलिस का उद्देश्य उन्हें मार डालना नहीं था, बल्कि जहाँ तक संभव हो, जीवित पकड़ने का था।

काका ने बिना घबराए हुए यह आदेश दिया—“सब लोग जमीन पर लेट जाओ और पेट के बल रेंगते हुए पीछे हटो!”

सब डाकू जमीन पर लेट गए। जग्गू और नीलू को काका ने लिटाकर इस तरह अपनी आड़ में कर लिया कि कोई गोली बिना काका के तन को पार किए जग्गू और नीलू में से किसी को भी नहीं लग सकती थी।

लाउड-स्पीकर पर ऊँचा स्वर मैदान में गूँजा—“तुम लोग चारों तरफ से घेर लिए गए हो। बच निकलने की कोशिश करना बेकार है। मैं पुलिस थानेदार तुम सबसे वादा करता हूँ कि तुम में से किसी को भी फाँसी नहीं होगी।”

काका ने आदेश दिया—“इस बेफ़तक की परवाह मत करो। जवाबी फायर करते हुए बीहड़ों की तरफ रेंगते रहो। साथियो! यकीन रखो कि हममें से कोई भी मरने वाला नहीं है।”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

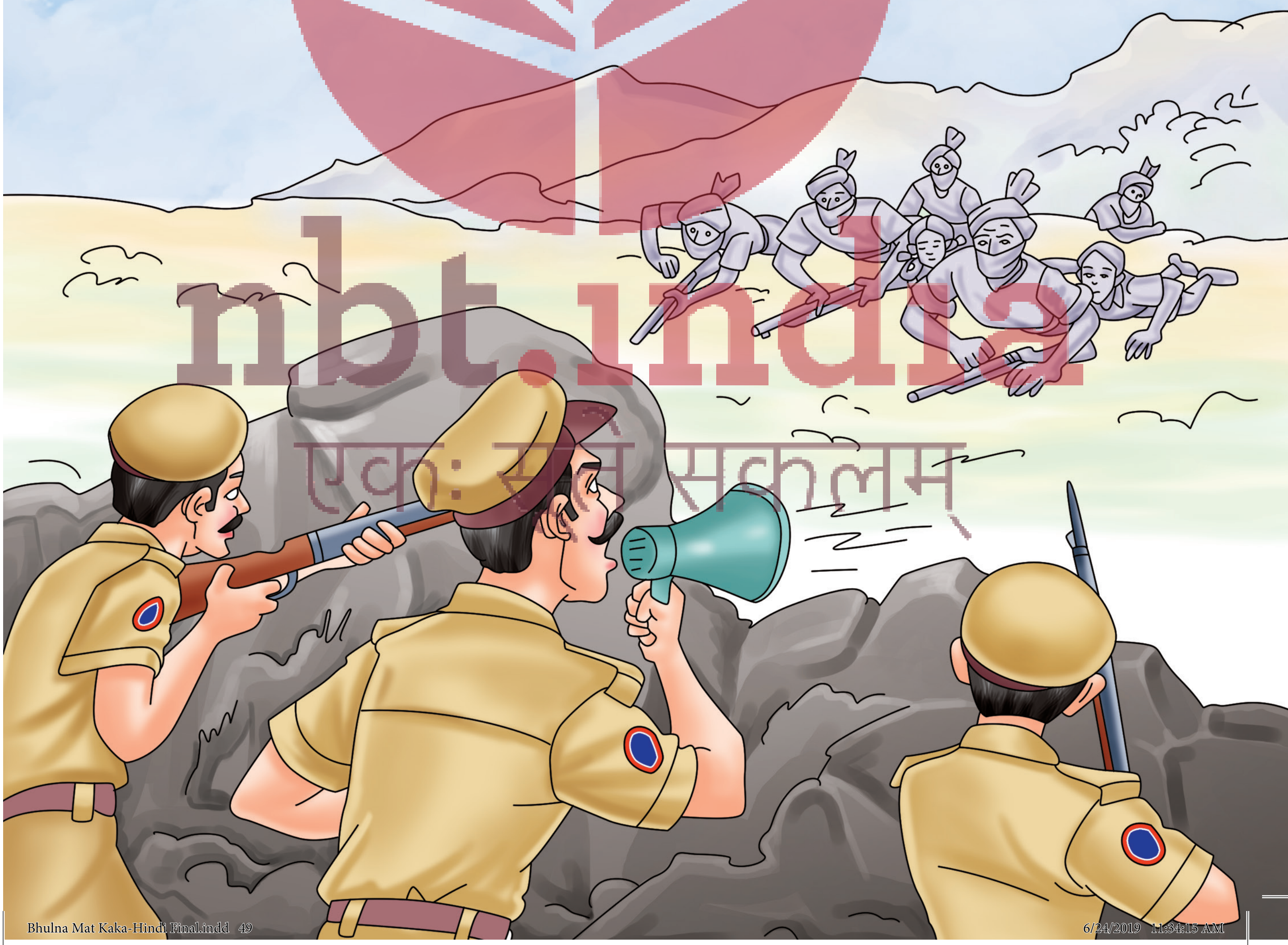
डाकू पीछे की तरफ रेंगने लगे, तो पुलिस ने उन पर गोलियों की बौछार छोड़ी। डाकुओं ने भी जवाबी गोलियाँ चलाईं। पुलिस आड़ में थी और डाकू खुले में। फिर भी किसी डाकू के मुँह पर बदहवासी नहीं छाई थी।

“अगर मैं मर जाऊँ।” सहसा काका ने घोषणा की, “तो इन दोनों बच्चों की किसी कीमत पर रक्षा की जाए और इन्हें वापस अपने माँ-बाप के पास पहुँचा दिया जाए!”

नीलू ने कहा, “काका, तुम्हें कुछ न होगा। कहे देती हूँ।”

नीलू ने सिर ऊपर उठाया, तो काका ने उसका सिर नीचे दबा दिया। फिर बोले, “तुम दोनों अपने सिर नीचे रखो। मेरे साथ-साथ रेंगो!”

पुलिस ने बच्चों को देख लिया था। वे उनको बचा-बचाकर गोलियाँ छोड़ रहे थे। यही कारण था कि किसी डाकू को अब तक कोई गोली नहीं लगी थी। पुलिस उस रास्ते पर गोलियाँ बरसा रही थी, जिधर डाकू रेंग रहे थे। उनका उद्देश्य डाकुओं को बीहड़ों की तरफ जाने से रोकना था।



nbt.india
एक: सूत्रे सकलम्

"जग्गू रे!" नीलू जग्गू के कान में फुसफुसाई।

जग्गू ने चेतावनी दी, "सिर नीचे ही रखना नीलू। वरना कोई गोली सिर फोड़ जाएगी और तुझे पता भी न चलेगा—समझी?"

"जग्गू रे, तुझे याद है—बांग्लादेश में पाकिस्तानी सिपाही बच्चों की आड़ लेकर लड़ाई लड़ते थे।"

जग्गू ने बात पूरी की—"हाँ, ताकि भारतीय सेना उन पर गोलियाँ न चलाए।"

"और काका बिल्कुल उल्टा कर रहे हैं। वह अपनी आड़ देकर हमें बचा रहे हैं।" नीलू ने कहा।

काका का सारा ध्यान अपने साथियों को बचाने में लगा हुआ था। उन्हें बिल्कुल भी आभास नहीं था कि उनकी आड़ में लेटे बच्चे आपस में क्या खुसुर-फुसुर कर रहे थे। वह उनकी बातें सुनते, तो निश्चय ही उनका कई किलो खून बढ़ जाता।

डाकू लोग बीहड़ के एकदम निकट पहुँच चुके थे। ज़िंदगी मौत से कुछ ही कदम दूर रह गई थी। काका को हैरानी हो रही थी कि आज पुलिस के निशाने इतने नाकाम कैसे हो रहे थे। उनके किसी साथी को खरोंच तक नहीं आई थी!

एक-एक करके डाकू बीहड़ में घुसते चले गए। पुलिस के निशाने क्यों बेकार हो गए थे, यह नीलू ने देख लिया था। एक चट्टान की ओर से एक चेहरा उभरा था। वह चेहरा उसके पिता थानेदार ब्रजराजसिंह का था।

नीलू और जग्गू ने कुछ क्षण की खुसुर-फुसुर के बाद एक ऐसा कदम उठाया, जिससे सभी डाकू चौंक उठे।

दोनों बच्चे एकाएक उठे और बगटुक पुलिस-दल की तरफ भाग लिए।

काका चिल्लाया—"मूर्खो! यह क्या करते हो! गोली लग जाएगी!"

मगर नीलू-जग्गू नहीं रुके।

इसके बाद काका ने जो काम किया, वह डाकू-दल और पुलिस-दल दोनों को ही चौंका देने वाला था।

काका अपनी जगह से उठे और जग्गू और नीलू के पीछे भागे। जब काका ने दोनों बच्चों को जाकर पकड़ा, तब तक वे पुलिस-दल के काफी नज़दीक पहुँच चुके थे।

nbt.india एकः सूते सकलम्

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 50 6/24/2019 11:34:15 AM

फुर्ती से आड़ में छिपे हुए दस-बारह सिपाही बाहर उछले और काका तथा बच्चों को खींचकर फिर आड़ में कर लिया।

नीलू के एक तरफ उसके पिताजी खड़े थे—थानेदार ब्रजराजसिंह! दूसरी तरफ सिपाहियों से घिरे काका थे।

सहसा नीलू सिपाहियों की परतें चीरकर काका से लिपट गई। वह चिल्लाई, “इन्हें छोड़ दीजिए। इन्हें वापस लौट जाने दीजिए। इन्होंने हर जगह हमारी बात मानी है।”

थानेदार साहब हक्के-बक्के रह गए। उनकी अपनी बच्ची उनके सामने थी और उनकी तरफ ध्यान न देकर वह एक डाकू से लिपट रही थी।

काका ने नीलू की पीठ दुलारते हुए कहा, “तुम अपने पिताजी के साथ जाओ, बेटी। जाने किस डोर से बँधा मैं तुम्हारे पीछे चला आया। आज मेरी बेटी जिंदा होती, तो तुम्हारे जितनी होती। जाओ, हम डाकुओं के साथ सौभाग्य नहीं, दुर्भाग्य ही बँधा होता है।”



नीलू ने भी जैसे हठ पकड़ ली। "मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी, काका। पिताजी तुम्हें जेल में बंद कर देंगे, तो मैं भी तुम्हारे साथ जेल में रहूँगी।"

अभी तक पीछे खड़े थानेदार साहब आगे बढ़े और काका से बोले, "काका, आपने जिस प्यार से इन बच्चों को रखा है, वह अपने आप में एक मिसाल है। आप अपने पूरे दल के साथ अगर आत्मसमर्पण कर दें, तो मैं कोशिश करूँगा कि आपको कम-से-कम सजा मिले, ताकि आप जल्दी-से-जल्दी अपनी नई ज़िंदगी शुरू कर सकें।"

काका बोले, "मैं तुम्हारी शर्तें मंजूर करता हूँ, कप्तान साहब। पर यह मत समझ लेना कि मैंने तुमसे हार मान ली है। नहीं, पुलिस से मैं कभी हार नहीं मान सकता था। मैंने तो हार मानी है इन बच्चों से।"

थानेदार साहब ने हँसकर कहा, "सो मैं अच्छी तरह जानता हूँ, काका। परसों ताँतपुर में तीन बड़े-बड़े डाकू-दल श्री जयप्रकाश नारायण के सामने हथियार डालकर अपनी नई ज़िंदगी शुरू करेंगे। क्यों नहीं आप भी परसों आ जाते?"

"तो क्या अब आप मुझे छोड़ रहे हैं?" काका ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं, काका। जिस डोर से बँधकर आप बरबस खिंचे चले आए, उसी डोर से बाँधकर आपको वापस भेज रहे हैं। हमें पूरा विश्वास है कि आप अपने दल को आत्मसमर्पण के लिए राज़ी कर लेंगे। फिर भी, अगर आप वादा करें कि जो लोग नहीं मानेंगे, उन्हें छोड़कर और बाकी सबको साथ लेकर आप परसों आ रहे हैं, तो हमें आपके ऊपर पूरा भरोसा है।"

काका के लिए पुलिस का यह स्वरूप बिल्कुल नया था। उन्होंने आँखों में उतराते जल को आँखों-ही-आँखों में ठहराते हुए, नीलू और जग्गू को अपनी छाती से लगाया और भर्राए हुए स्वर में बोले, "आऊँगा। मैं जरूर आऊँगा। काका को मज़बूती से बाँध लिया है इन बहादुरों ने।"

"ठीक है। तो अब आप जा सकते हैं।"

काका जाने लगे, तो नीलू फिर ज़ोर से उनसे लिपट गई।

"काका, परसों ताँतपुर जरूर आना। मैं भी आऊँगी। भूलना मत, काका!" सबकी आँखें गीली हो गईं।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

आइडियल पब्लिशिंग साल्यूशंस, दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा रॉयल ऑफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

Bhulna Mat Kaka-Hindi Final.indd 52 6/24/2019 11:34:16 AM